वैद्यराज जीवक

– घनश्याम ओझा

प्रस्तुत पाठ में प्राचीन भारत के प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक जीवक के जीवन और उनके द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए असाधारण कार्यों का उल्लेख किया गया है। ज्ञान की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने औषधियों के निर्माण और शल्य क्रिया सम्बन्धी अनेक प्रयोगकर अपनी प्रतिभा को प्रमाणित कर दिया। महात्मा बुद्ध के प्रति उनकी अगाध भक्ति थी परंतु उन्होंने स्वधर्म को महत्व दिया। इसी के साथ जन-जन के प्रति चिकित्सक का विशुद्ध सेवाभाव का परिचय देकर उन्होंने संसार के समक्ष कर्त्तव्यनिष्ठा का उदाहरण रखा। उनकी निष्ठा से प्रेरणा लेने और आयुर्वेद की महत्ता से अवगत कराने के लिए लेखक सोदाहरण घटनाक्रमों का वर्णन कर रहा है।

कई दिनों तक परिश्रमपूर्वक खोजने के बाद भी जीवक को ऐसी कोई वनस्पति प्राप्त नहीं हुई जिसमें औषधीय गुण न हों। वह तक्षशिला विश्वविद्यालय के विशाल परिसर के बाहर दूर-दूर तक जाकर ढूँढ चुका था, अनेक अज्ञात वनस्पतियों का परीक्षण भी कर चुका था पर उसे सफलता हाथ नहीं लगी। उसे खाली हाथ आचार्य के पास लौटना पड़ा। लौटते हुए वह विचार कर रहा था- आचार्य से अपनी असफलता बताकर क्या उत्तीर्ण हुआ जा सकता है? नहीं। उसे अभी और परिश्रम करना पड़ेगा। उसकी शिक्षा अधूरी है। उसने धरती माता के वात्सल्य का अनुभव किया था। प्राणियों के पोषण और रक्षण के लिए प्रकृति द्वारा दिए गए वरदानों से वह परिचित हुआ था। उसके मन में यह बात कचोट रही थी कि प्रकृति से इतनी अमूल्य जैव-संपदा पाकर हम कृतज्ञ क्यों नहीं होते? कितने जड़मति हैं वे लोग, जो उसे नष्ट करते हैं।

जीवक सूर्यास्त होने के पूर्व तक्षशिला विश्वविद्यालय के सिंहद्वार पर पहुँचा। आकाश में सावन के घने काले बादलों के छा जाने से संध्या का आभास हो रहा था। बूँदा-बाँदी भी शुरू हो गई थी। उसने एक पल सावन के बादलों से भरे-पूरे आकाश को देखा और दूसरे पल उसकी आँखें हरी-भरी धरती पर आ टिकी। आचार्य के निवास तक जाने वाली पगडंडी घास से पट चुकी थी, पर जीवक के कदम सही दिशा में बढ़ते चले गए।

जब जीवक आचार्य के कक्ष में पहुँचा, दीपधरों पर घृत के दीपक जल चुके थे। आचार्य को सामने देख जीवट ने साष्टांग प्रणाम किया। आचार्य ने आशीर्वाद दिया और पूछा, *"वत्स , यह तुम्हारी अंतिम परीक्षा थी, तुम उत्तीर्ण हो गए।* वास्तव में धरती पर ऐसी कोई वनस्पति है ही नहीं जो औषधीय गुण से रहित हो । ऋग्वेद में बताए गए रोगों और उपचारों के ज्ञान को जिन ऋषियों ने और आगे बढ़ाया, उनमें भारद्वाज और आत्रेय का नाम पहले आता है, उनके बाद धन्वंतरि, चरक, सुश्रुत आदि का। इनमें से सबने सभी वनस्पतियों को धरोहर माना और उन्हें प्राणियों के समान सजीव कहा । इनकी खोजों का लाभ हम सभी को प्राप्त हुआ है। वत्स जीवक, तुम इन्हें अवश्य याद रखना । इससे तुम कभी भ्रमित नहीं हो सकोगे, इनके परोपकारी कार्यों को और आगे बढ़ाते रहोगे।"

आचार्य एक क्षण के लिए मौन होकर जीवक को देखने लगे। जीवक की प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी। आचार्य ने स्नेह से कहा "वत्स, तुम कल प्रातः अपने नगर राजगृह के लिए प्रस्थान कर सकते हो ।"

अगले दिन चलते समय जीवक को आचार्य मार्गव्यय और पाथेय देकर विदा करने लगे। जीवक की आँखों से आँसू बह रहे थे। आचार्य बार-बार अपनी डबडबाई आँखें उत्तरीय से पौंछ रहे थे। जीवक आचार्य के चरण छूकर विदा हुए।

जीवक को याद आ रहा था- जिस दिन उसे ज्ञात हुआ कि वह एक अनाथ बालक है, उसे बहुत कष्ट हुआ था। सम्राट बिंबसार के पुत्र राजकुमार अभय ने उसे नवजात अवस्था में मिट्टी के एक ढेर पर पाया था। चूँकि वह प्रतिकूल

परिस्थिति में भी जीवित रहा, उसका नाम 'जीवक' रखा गया और उसका लालन-पालन राजकुमार ने करवाया था, इसलिए उसे कौमारभृत्य कहा जाने लगा। इस तरह उसका पूरा नाम कौमारभृत्य जीवक पड़ा। जीवक ने संकल्प लिया था कि मैं किसी पर निर्भर नहीं रहूँगा, कठोर परिश्रम और तप से योग्यता प्राप्त करूँगा और अपने पूरे सामर्थ्य से असहायों का सहायक बनूँगा । इसी संकल्प से प्रेरित होकर वे एक दिन आयुर्वेद पढ़ने के लिए तक्षशिला विश्वविद्यालय आए। उनकी कामना पूरी हुई। वे अपने को ऋषियों के अर्जित ज्ञान का उत्तराधिकारी पाकर धन्य हो गए थे। वे रोग-शोक मिटाने वाले एक कुशल वैद्य बन चुके थे।

जीवक तक्षशिला से चलकर अयोध्या नगरी पहुँचे । उन्हें सरयू नदी के तट पर बसी एक सुप्रसिद्ध नगरी को देखने की इच्छा थी। भ व्य मंदिरों और सुंदर भवनों वाली इस नगरी के मार्ग पर जाते हुए उन्होंने सोचा - क्यों न यहाँ के प्रसिद्ध वैद्यों से मिला जाए और यहाँ की चिकित्सा व्यवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त की जाए। उन्हें अपने आचार्य से यह ज्ञात हुआ था कि उनके सहपाठी आचार्य देवदत्त अयोध्या नगरी के विख्यात वैद्य हैं । वे वैद्यराज देवदत्त से मिलने गए। जीवक का परिचय पाकर देवदत्त बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, ''वत्स नगर सेठ की पत्नी के सिर में पिछले सात वर्षों से तीव्र पीड़ा है। मैं उसके उपचार में अब तक सफल नहीं हो पाया हूँ । मैं चाहता हूँ कि तुम नगर सेठ की पत्नी का उपचार करो। तुम शल्य क्रिया में भी कुशल हो। आवश्यक हो तो उसके मस्तिष्क की शल्य क्रिया भी कर सकते हो।'' जीवक ने इस चुनौती को स्वीकार किया।

काफी समय से बीमार होने के कारण नगर सेठ की पत्नी निराश हो चुकी थी। वह सोचने लगी थी, उसका रोग अब मरने के बाद ही छूटेगा। उसने जब युवा वैद्य जीवक को देखा तो बोली ''वृद्ध वैद्य ही अनुभवी होते हैं। बेटे, तुम क्या कर पाओगे? '' जीवक ने विनम्रता से उसका धीरज बँधाया और गहराई से परीक्षण किया। उन्होंने शल्य क्रिया की आवश्यकता नहीं समझी। उन्होंने गाय के पुराने घी से औषध तैयार की और नगर सेठ की पत्नी की नाक के छिद्र से औषध डाली। वह औषध सेठानी के मुँह से जैसे-जैसे बाहर निकलने लगी, उसका सिरदर्द कम होने लगा । अंततः वह स्वस्थ हो गई। जीवक की यह पहली सफलता थी। अयोध्या नगरी के वैद्यों ने जीवक का सम्मान किया। उन्हें नगर सेठ ने कई सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के रूप में दी ।

राजगृह पहुँचकर उन्होंने अपने प्रतिपालक राजकुमार अभय से भेंट की और सारी स्वर्ण मुद्राएँ उन्हें देकर कृतज्ञता व्यक्त की। राजकुमार अभय ने अपने महल में ही उनके रहने की व्यवस्था कर दी।

राजगृह पहुँचने के कुछ ही दिनों के भीतर उन्होंने शल्य क्रिया से दो असाध्य रोगियों को रोग मुक्त किया। उन्होंने एक युवक रोगी का पेट खोलकर उसकी उलझी हुई आँतों की गाँठे खोली और पुनः सिलाई कर औषध का लेप लगा उसे स्वस्थ कर दिया। दूसरी शल्य क्रिया उन्हें एक सेठ के मस्तिष्क की करनी पड़ी । सेठ को अन्य वैद्यों ने बता दिया था कि वह पाँच दिन से अधिक जीवित नहीं रह सकता। जब वह रोगी जीवक के पास आया तो उन्होंने एक शर्त रखी-

''तुम्हें इक्कीस माह तक बिस्तर पर लेटना पड़ेगा, सात माह दाएँ, सात माह बाएँ और सात माह सीधे ।''

मरता क्या न करता, रोगी ने शर्त मान ली। उसकी खोपड़ी खोली गई, शल्य क्रिया पूरी हुई। बिस्तर पर लेटने की बारी आई। अभी सात दिन ही बीते थे कि वह रो पड़ा कहने लगा -

''वैद्यराज में मर जाना चाहता हूँ, पर इस कष्ट में रहना नहीं चाहता ।''

जीवक ने कहा - ''बाई करवट से न सही, पर तुम्हें दाई करवट तो सात माह लेटना होगा ।''

रोगी ने स्वीकार किया। लेकिन, फिर सात दिन बाद वह चिल्ला पड़ा -

''वैद्यराज मुझे कष्ट से उबारिए, मैं मरा जा रहा हूँ ।''

जीवक ने कहा -

''दाई करवट से न सही, पर तुम्हे सीधे लेट कर सात माह तो बिताने ही होंगे ।'' रोगी ने राहत की साँस ली और वैद्यराज का आदेश मान लिया। लेकिन सात दिन बाद वह फिर कराह उठा –

''मुक्ति दीजिए वैद्यराज मेरे प्राण निकल रहे हैं।''

जीवक ने कहा – ''अब आप उठिए और घर जाइए ।'' रोगी डर गया । जीवक ने उसे समझाया –

''अब आप रोगी नहीं रहे, आप स्वस्थ हैं, आपको केवल इक्कीस दिन ही विश्राम देना चाहता था, लेकिन आप में धैर्य की कमी देख, मैंने इक्कीस दिनों को इक्कीस माह बताया था ।''

सेठ स्वस्थ होकर विदा हुआ ।

उन्हीं दिनों मगध के सम्राट बिंबसार अस्वस्थ हो गए। उनका निदान जीवक ने चुटकी बजाते ही कर दिया। सम्राट बिंबसार ने जीवक को मगध राज्य के श्रेष्ठ अलंकरण से सम्मानित किया और उन्हें अपना मुख्य चिकित्सक नियुक्त किया।

एक बार बिंबसार के मित्र अवंती नरेश चंडप्रद्योत पीलिया से पीड़ित हो गए। बिंबसार ने जीवक को अवंती भेजा। वैद्यराज जीवक के सामने एक विचित्र समस्या आ खड़ी हुई। अवंती नरेश को घी से बड़ी घृणा थी। उन्हें घी देखकर ही उलटी आ जाती थी और जीवक की अधिकांश प्रभावकारी औषधियों का अनुपान गाय का घी ही होता था। यदि घी के साथ औषधि न दी जाए तो चंडप्रद्योत का पीलिया न छूटे, पीलिया न छूटे तो बिंबसार का कोप हो, जीवक का अपमान भी और यदि घी के साथ औषधि दी जाए तो चंडप्रद्योत की उलटी शुरू हो और वह दंड का भागी बने। इसी ऊहापोह में पड़े जीवक ने निर्णय लिया कि चंडप्रद्योत का रोग मुक्त करना पहला लक्ष्य होना चाहिए और अपने प्राणों की रक्षा करना दूसरा।

जीवक ने चंडप्रद्योत से कहा ''महाराज, निर्धारित तिथि और नक्षत्र में मुझे विशेष जड़ी-बूटियों को लाने के लिए घने वन में जाना होगा, मुझे तीव्रगति से चलने वाला हाथी चाहिए और मैं चाहता हूँ कि राजप्रासाद से किसी भी समय मुझे निकलते हुए कोई रक्षक रोके नहीं।'' जीवक के लिए अनुकूल व्यवस्था हो गई। जीवक ने अवंती नरेश चंडप्रद्योत को घी के साथ औषधि देने का ऐसा समय बताया जब वे अवंती राज्य की सीमा पार कर मगध की सीमा में पहुँच जाएँ। वे तेज दौड़ने वाले हाथी पर सवार होकर भाग निकले। औषधि खाकर अवंती नरेश चंडप्रद्योत को कष्ट तो हुआ, पर वह शीघ्र ही स्वस्थ हो गए। उन्होंने जीवक के सम्मान में बहुमूल्य वस्त्र राजगृह भेजे।

आयुर्वेद के ज्ञान से जीवक की सारी कामनाएँ धीरे-धीरे पूरी हो गई थी। उन्हें धर्म, अर्थ और काम रूपी तीन पुरुषार्थ प्राप्त हो गए थे, अब वे मोक्ष के विषय में सोचने लगे। तो अपने युग के महान धर्मप्रवर्तक भगवान बुद्ध के दर्शन की इच्छा करने लगे। एक बार उन्हें भगवान बुद्ध की चिकित्सा का अवसर मिल गया। भगवान बुद्ध के पाँव में धारदार पत्थर से चोट लग गई थी। उनके पाँव से खून बहने लगा। जीवक ने उनके पाँव में शीघ्रता से रक्त स्राव रोकने वाली औषधियों का लेप लगाया और पट्टी बाँध दी। इसी बीच चिकित्सा-कार्य से उन्हें नगर के बाहर जाना पड़ा। वे भूल गए कि रक्त स्राव के बंद हो जाने पर भगवान बुद्ध के पाँव से पट्टी खोल देनी चाहिए। कार्य से अवकाश मिलने पर जब वे लौटे तब तक इतनी रात हो गई थी कि नगर का सिंहद्वार बंद हो चुका था। जीवक को यह सोचकर कर रात भर नींद नहीं आई कि भगवान बुद्ध को उस पट्टी से कितनी पीड़ा हो रही होगी। प्रातः काल जब वे भगवान बुद्ध से मिलने गए तो उन्होंने देखा कि भगवान बुद्ध के पाँव से पट्टी खुली हुई है। उनके पाँव की चोट ठीक हो गई है। भगवान बुद्ध उनके मन की बात समझ गए। उन्होंने कहा ''जीवक, जब तुम पट्टी खोलने के लिए चिंतित हो रहे थे, तभी मैंने पट्टी खोल दी थी।'' जीवक ने आश्चर्य से भगवान बुद्ध की ओर देखा और वे उनके चरणों में नतमस्तक हो गए। उन्हें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि भगवान बुद्ध ने उनके मन को अपने मन से जोड़ लिया है वे उनके कृपापात्र बन चुके हैं ।

जीवक को जन-जन की सेवा का सम्मान पाने का अवसर मिला उन्हें राज वैभव प्राप्त हुआ और इन सबसे उत्तम,

सर्वपूज्य भगवान बुद्ध की असीम कृपा भी मिली। उन्हें याद आ रहा था- ''आयुर्वेद के ज्ञान और अभ्यास से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सब कुछ मिल जाता है।''

जीवक भगवान बुद्ध के शिष्यों के स्वास्थ्य की देखभाल करते थे। जीवक हमेशा भगवान बुद्ध के साथ रहना चाहते थे। लेकिन जन-जन को रोग मुक्त रखने की तपस्या ही एक चिकित्सक का स्वधर्म है। अत: वे इस कल्याणकारी कार्य को नहीं छोड़ सके।

वस्तुत: कौमारभृत्य जीवक एक असाधारण वैद्य थे। इसलिए आयुर्वेद की परंपरा के पोषण और उन्नायक के रूप में चरक एवं सुश्रुत के साथ उन्हें भी याद किया जाता है।

अभ्यास

बोध प्रश्न :-

1. जीवक किस शास्त्र के विद्वान थे ?
2. जीवक के मन में किनके दर्शन की इच्छा थी ?
3. राजकुमार अभय के प्रति जीवक ने अपनी कृतज्ञता कैसे व्यक्त की ?
4. अवंती नरेश से तेज चलने वाला हाथी माँगने के पीछे जीवक का क्या उद्देश्य था ?
5. जीवक के खाली हाथ लौटने पर भी आचार्य ने उन्हें परीक्षा में उत्तीर्ण क्यों कहा ?
6. जीवक ने कौन सा संकल्प लिया था?
7. सम्राट बिम्बसार के पुत्र ने 'जीवक' नाम क्यों दिया ?
8. आचार्य द्वारा जीवक को विदा करते समय कौन सी सीख दी गई थी? अपने शब्दों में लिखिए ।
9. जीवक द्वारा किन-किन रोगियों की चिकित्सा की गई। विवरण दीजिए।
10. जीवक को ऐसा क्यों लगा कि भगवान बुद्ध के कृपा पात्र बन गए हैं ?
11. सेठ के मस्तिष्क की शल्य क्रिया करने के पूर्व जीवक ने क्या शर्त रखी ?

योग्यता विस्तार

1. ''आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति लाभकर है'' इस विषय पर कक्षा में वादविवाद प्रतियोगिता आयोजित करें ।
2. प्राचीन भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा से संबंध रखने वाले चरक, सुश्रुत और धन्वन्तरि के विषय में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कर लिखिए।
3. प्राचीन भारतीय चिकित्सकों के चित्र एवं उनका चिकित्सा क्षेत्र जानकर एक एलबम बनाइए।
4. घर के आसपास पाई जाने वाली औषधि पत्तियों को एकत्र कीजिए।

शब्दार्थ

परिसर - क्षेत्र, जड़मति - मूर्ख, बुद्धि रहित, आभास - एहसास, पगडण्डी - रास्ता, पाथेय - जलपान, संकल्प - दृढ़ निश्चय, औषध - दवा